IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बौद्ध शिक्षण केन्द के रुप में नालन्दा विश्वविद्यालय का एक समालोचनात्मक अध्ययन

डॉ0 विनोद कुमार यादव

असिस्टेंट प्रोफेसर,
पंचंशील डिग्री कालेज मिरजापुर

स्थापना :–नालन्दा महाविहार प्राचीन युग में भारत का एक अत्यधिक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था। मूलतः यह एक बौद्ध विहार था जिसका विकास एक महान विश्वविद्यालय के रुप में हुआ।[1]इस काल (600 ई0 से 1200 ई0 तक) के विश्वविद्यालयों में नालन्दा विश्वविद्यालय सर्वाधिक प्रसिद्ध था।[2]यह विश्वविद्यालय बिहार प्रान्त की राजधानी पटना के दक्षिण में लगभग 40 मील की दूरी पर आधुनिक बड़गॉव नामक ग्राम के पास स्थित था।[3]नालन्दा विश्वविद्यालय राजगृह से लगभग 8 मील दर है। सर्वप्रथम यहाँ एक बौद्ध विहार की स्थापना गुप्त काल में करवायी गयी। नालन्दा का नाम सर्वप्रथम बौद्ध और जैन ग्रन्थों में मिलता है। किन्तु शिक्षा के केन्द्र के रुप में इसकी ख्याति 450 ई0 के पूर्व नहीं थी।[4]चीनी यात्री ह्वेनसांग लिखता है कि इसका संस्थापक 'शक्रादित्य' था। जिसने बौद्ध धर्म के त्रिरत्नों के प्रति महति श्रद्धा के कारण इसकी स्थापना करवायी थी शक्रादित्य की पहचान कुमारगुप्त प्रथम से की जाती है जिसकी सुप्रसिद्ध उपाधि 'महेन्द्रादित्य' की थी।[5]कुमारगुप्त के पुत्र तथा उसका उत्तराधिकारी बुद्धगुप्त ने अपने पिता के कार्य को जारी रखते हुये। इसके दक्षिण में दूसरा विहार बनवाया।[6]इसके बाद तथागतगुप्त ने पूरब में एक विहार बनवाया।[7]बाद में मध्यभारत के एक शासक ने यहाँ पर एक विहार बनवाया तथा सभी विहारों को चारों ओर से घेरते हुये एक चहरदिवारी बनवा दी। चीनी यात्री द्वारा उल्लेखित में राजा प्रथम पॉच गुप्तवंश से सम्बन्धित थे। यद्यपि इनकी पहचान तथा क्रम निश्चित नहीं है। नालन्दा सारिपुत्र का जन्म स्थान बताया गया है। अशोक जब सारिपुत्र का चैत्य देखने के लिये यहाँ पर आये थे तो यहाँ पर अशोक ने एक विहार बनवाया था।[8]इस तरह से नालन्दा का प्रथम संस्थापक महान सम्राट अशोक को भी माना गया है।[9]आगे चल कर गुप्त शासकों में बालादित्य ने भी कुछ मन्दिरों का निर्माण करवाया था।[10]फाहियान ने ''नालो'' नामक एक ग्राम था उल्लेख किया है। कुछ विद्वानों ने इसे ही नालन्दा माना है।[11]परन्तु सर्वसम्मति से यह स्वीकृति नहीं है। ह्वी–ली ने ''ह्वेनसांग की जीवनी'' में लिखा है कि ह्वेनसांग के आने के सात सौ वर्ष पूर्व ही नालन्दा का निर्माण हुआ था।[12] अतः नालन्दा विहार का निर्माण 80 ई0 पू0 में हुआ होगा।[13]इत्सिंग के अनुसार नालन्दा शब्द नागनन्द का परिवर्तित रुप है।[14]मध्य भारत के शासक की पहचान सम्राट हर्ष से की जाती है। जिसने नालन्दा में एक ताम्रविहार बनवाया था। 11वीं शती के अन्त तक हिन्दू तथा बौद्ध दाताओं द्वारा नालन्दा में मठ तथा विहार बनवायें जाने का क्रम चलता रहा। हर्षकाल तक आते–आते नालन्दा महाविहार एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विश्वविद्यालय के रुप में विकसित हो गया था।[15]

विश्वविद्यालय का भवन :

नालन्दा विश्वविद्यालय में की गयी खुदाइयों से पता चलता है कि नालन्दा विश्वविद्यालय की परिधि लगभग एक मील लम्बी तथा आधा मील चौड़े क्षेत्र में स्थित था। जिसके अन्दर 6 विहार और स्तुपों का निर्माण हुआ था। भवन स्तूप एवं विहार वैज्ञानिक योजना के आधार पर बनाये गये थे। विश्वविद्यालय में 8 बड़े कमरे तथा विशाल व्याख्यान मन्दिर तथा 300 छोटे अध्ययन कक्ष बने हुये थे नालन्दा का भवन इतना ऊँचा था कि गगनचुम्बी विहारों पर चढ़कर बादलों का आकार बदलना आसानी से देखा जा सकता था। जिसका मुख्य द्वार दक्षिण की ओर था।[16] विश्वविद्यालय के तीन भवनों में स्थित 'धर्मगुंज' नामक 9 मंजिला ऊँचा जिसकी ऊँचाई 300 फुट थी पुस्तकालय था। सम्पूर्ण विश्वविद्यालय ईंटों की दीवार से घिरा हुआ था। इसमें सभी विषयों की पुस्तकों का विशाल संग्रह था। इसके तोन भवन क्रमशः (1) रत्नसागर (2) रत्नोदधि (3) रत्न–रजक नाम से जाने जाते थे।[17] इन सभी भवनों के अलावा मैदान में चारो तरफ पवित्र और निर्मल जल के लगभग 12 सरोवर थे। इनमें कमल खिले रहते थे। जिनसे विश्वविद्यालय की सुन्दरता में चार–चाँद लग जाते थे।[18]

नालन्दा विश्वविद्यालय का सम्पूर्ण भाग ईंटों की दीवार से घिरा हुआ था। जो कि पूरे मठ को बाहर से घेरती थी। एक द्वार विद्यापीठ की ओर था, जिससे 8 अन्य हाल जो संघाराम के बीच में स्थित है अलग दिये गये थे।[19] नालन्दा की अलंकृत मीनारे तथा परियों के समान गुम्बज पर्वत की नुकीली चोटियों की तरह परस्पर बिना हिले–मिले से खड़े है।[20] मान

मन्दिर धुम्र मे विलीन हुये से लगते है। तथा ऊपरी कमरे बादलों के ऊपर विराजमान है खिड़कियों से यह देखा जा सकता है। कि किस प्रकार हवा तथा बादल नया–नया रुप धारण करते हैं। बीच–बीच में निर्मल जल नील कमलों से युक्त जलाशय से विश्वविद्यालय की शोभा द्विगुणित हो जाती है।[21] प्रत्येक विहार के प्रांगण के कोने पर एक कुँआ मिला है। इसमें सबसे प्रसिद्ध चन्द्रगोमिन का बनवाया गया चन्दकूप था। इस कुँए का जल लोग इस विश्वास से पीते थे कि उनकी बुद्धि प्रखर होगी।[22] गहर तथा पारभाशी तालाबों के ऊपर नील कमल खिले हैं जो गहरे लाल रंग के कनक पुष्पों से मिले है। तथा बीच–बीच में आम्रकुन्ज चारों ओर अपनी छाया बिखेरते है। बाहर की सभी कक्षायें जिनमें श्रमण आवास थे चार मंजिली है।[23] इनमें मकराकृत वार्जे सुसज्जित एवं चित्रित मोती के समान लाल स्तम्भ, अलंकृत लघु स्तम्भ तथा खपड़ो से ढकी हुई छते जो सूर्य का प्रकाश सहस्रों रुप में प्रतिविम्बित करती हे। ये सभी विहार की शोभा को बढ़ा रही है।[24] इत्सिंग ने लिखा है कि विहार में 10 से भी अधिक तड़ाग थे। जिनमें आचार्यगण स्नान किया करते थे। प्रातः काल स्नान के लिये एक घण्टा बजता था। एक जलघड़ी भी थी। [25] विश्वविद्यालय की परिधि में रंगीन गुफायें और स्तम्भ भी थे, छतों पर सुन्दर चित्रकारी थी। जिसकी क्रान्ति से विहार के सौन्दर्य में वृद्धि होती थी।[26] ह्वेनसांग ने इसके सौन्दर्य का विशद वर्णन किया है। [27] शक्रादित्य के विहार में बौद्ध मूर्तियों का भी उल्लेख किया गया है।[28] इस प्रकार इन सभी भवनों के बीच नालन्दा का विश्वविद्यालय एक विस्तृत क्षेत्र में स्थित था।

नालन्दा विश्वविद्यालयका विकास एवं निर्वाह का भार :

शिक्षा केन्द्र के रुप में नालन्दा की ख्याति पाँचवीं शताब्दी से बढ़ी तथा 6वीं शताब्दी तक आते–आते यह न केवल भारत बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय जगत में भी प्रतिष्ठित हो गया।[29] चीनी यात्री फाह्यिान जो चौंथी शताब्दी में भारत की यात्रा पर आया था नालन्दा का कोई उल्लेख नहीं करता, जबकि उसके दो शताब्दियों बाद आने वाला चीनी यात्री ह्वेनसांग तथा इत्सिंग इसकी उच्च शब्दों में प्रशंसा करते है।[30] अतः स्पष्ट है कि हर्ष काल में नालन्दा को पूर्ण राजकीय संरक्षण मिला जिसके परिणामस्वरुप यह जगत प्रसिद्ध विश्वविद्यालय बन गया।[31] हर्ष ने लगभग 100 गॉवों की आया इसके निर्वाह के लिये दिया। [32] चीनी विवरण से पता चलता है कि इन गॉवों के 200 गृह प्रतिदिन कई सौ पिकल (माप की इकाई) साधारण चावल तथा कई सौ कट्टी (माप की मात्रा) घी और मक्खन नालन्दा विश्वविद्यालय को दान में दिया करते थे।[33] इस प्रकार यहाँ के विद्यार्थियों को जीवनोपयोगी वस्तुयें इतनी अधिक मात्रा में सुलभ थी कि उन्हें मांगने के लिये अन्यत्र नहीं जाना पड़ता था। तथा वे अपना सारा समय विद्याध्ययन में ही लगाते थे। जबकि यूरोप में अभी विश्वविद्यालयों की स्थापना भी नहीं हुई थी।[34] नालन्दा में उच्च शिक्षा की व्यवस्था थी प्रखर बुद्धि वाले विद्यार्थी यहाँ विशेष योग्यता प्राप्त करने आते थे। एक प्रकार से यहाँ पर शोध कार्य होता था।[35] नालन्दा विश्वविद्यालय की खुदाई में कुछ गांवों की मुहर तथा पत्र मिले है।[36] जो विश्वविद्यालय को सम्बोधित करके लिखे गये है। विद्यार्थियों से किसी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाता था। ह्वेनसांग ने खर्चे के लिये 200 गांवों को दान में प्राप्त होने की बात कहता है।[37] तथा कहता है कि इन गांवों के निवासी प्रतिदिन कई मन चावल और दूध यहाँ भेजा करते थे। उनके आवास और भोजन की व्यवस्था विश्वविद्यालय द्वारा निःशुल्क भी दी जाती थी।[38] विद्याथियों की आवश्यकताओं की पूर्ति का ध्यान रखा जाता था। प्रत्येक विद्यार्थी के लिये पत्थर की चौकी, दीपक और पुस्तक रखने के लिये एक आलमारी बनी हुई थी।[39] इत्सिंग के उल्लेख से ज्ञात होता है कि विद्यार्थी निःशुल्क आवास और भोजन का अधिकारी तभी था जब वह विहार में श्रमदान कुछ करें।[40]

नालन्दा विहार में एक प्रस्तर–मार्ग था जिस पर पंकज–पुष्प उत्कीर्ण था।[41] नालन्दा विहार में इस सुविधापूर्ण व्यवस्था के कारण विद्यार्थी चिन्तारहित होकर एकाग्रचित्त अध्ययन में पूर्णता प्राप्त करते थे। अध्ययन के क्षेत्र में विद्यार्थियों की चरम सफलता का यही कारण था।[42] विद्यालय की इतनी प्रतिष्ठा थी कि अन्य देशों के विद्यार्थी भी अध्ययन के लिए यहां पर चले आते थे।[43] अनेक सम्प्रदाय के विद्यार्थी यहां पर एकत्र होते थे। फिर भी उनमें वैमनस्य की कोई भावना नहीं आती थी। यह वाद–विवाद का ऐसा स्थान था जहाँ अपनी श्रेष्ठता और विचारों को प्रकट करने की पूर्ण स्वतंत्रता थी।[44] इससे तत्कालीन उदारता और सहिष्णुता की भावना का ज्ञान होता है। इत्सिंग के समय में भी मंगोलिया के विद्यार्थी यहां अध्ययन के हेतु आये थे। [45]

नालन्दा विश्वविद्यालय में प्रवेश और विद्याभ्यास :

नालन्दा विश्वविद्यालय में न केवल भारत के कोने–कोने से बल्कि चीन, मंगोलिया, तिब्बत कोरिया, मध्य ऐशिया आदि देषों से भी विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे।[46] यहां के आदर्श इतने ऊँचे थे कि ह्वेनसांग लिखता है कि विद्यार्थियों का नालन्दा के नाम से ही सम्मान होता था।[47] यहाँ पर अध्ययन–अध्यापन का स्तर अत्यन्त उच्चकोटि का था। प्रवेश के लिये एक कठिन परीक्षा ली जाती थी। जिसमें दस में से दो या तीन विद्यार्थी ही मुश्किल से सफल हो पाते थे।[48] ह्वेनसांग के अनुसार केवल 20 प्रतिषत ही परीक्षा में सफल हो पाते थे। फिर भी विद्यार्थियों की सख्या कम नहीं थी।[49]ह्वेनसांग के समय में नालन्दा विश्वविद्यालय ने स्थानीय विद्यार्थियों की संख्या दस हजार एवं अध्यापकों की संख्या पन्द्रह सौ से भी अधिक थी। यह अध्यापक विभिन्न विषयों की शिक्षा प्रति दिन देते थे।[50]प्रवेश विधि द्वारा अनुमान लगाया जा सकता है कि प्रवेश के समय विद्यार्थियों की अवस्था कम से कम बीस वर्ष की अवश्य रहती होगी।[51]इत्सिंग के अनुसार पन्द्रह वर्ष के विद्यार्थी को वृत्तिसूत्र का अध्ययन करना पड़ता था। इसकी समाप्ति बीस वर्ष की अवस्था में होती थी। इसके पश्चात् ही वह नालन्दा, बल्लभी जैसे शिक्षा केन्द्रों में दो या तीन वर्ष तक दर्शनशास्त्र का अध्ययन करता था।[52]दूर–दूर से आने वाले

विद्यार्थी निष्चय ही छोटी अवस्था के नहीं रहते होंगे नालन्दा में गौंण शिक्षा का भी प्रबन्ध था। उसका अलग विभाग होता था जिसमें कम अवस्था के ब्रह्मचारी 'माणवक' प्रवेश पाते थे।[53]

नालन्दा विश्वविद्यालय का प्रबन्ध तथा प्रशासन :–

यहाँ का प्रबन्ध तथा प्रशासन आदर्श ढंग का था। नालन्दा के छात्र विश्वविद्यालय के नियमों और आदर्शों का दृढ़ता से पालन करते थे वे पूरे भारत में आदर्श के प्रतीक माने जाते थे विद्यार्थी जीवन के आदर्श नैतिक एवं बौद्धिक दोनों दष्टिकोण से ऊचे थे।[54]इत्सिंग के अनुसार नालन्दा के नियम जितने कठोर थे उतने अन्य किसी विश्वविद्यालय में या मठ में नहीं थे।[55] नालन्दा विश्वविद्यालय के द्वारा पर द्वारपाल की नियुक्ति होती थी। यह द्वारपाल प्रातः काल एवं सायंकाल नक्कारे की ध्वनि से समय का ध्यान दिलाता था इसक अतिरिक्त प्रधान आचार्य, कर्मदान तथा स्थाविर भी होते थे।[56] कर्मदान का कार्य विहार के सभी कार्यों का निरीक्षण करना था।[57] विद्यार्थियों का समय अध्ययन और विवाद में बीत जाता था। ज्येष्ठ और कनिष्ठ विद्यार्थी एक दूसरे को ज्ञान प्राप्त करने में सहयोग देते थे।[58] नालन्दा में प्रतिदिन भाषण होते थे।[59] ह्वेनसांग ने यहां पाँच वर्ष तक बौद्ध और ब्राह्मण ग्रन्थों का अध्ययन किया था।[60] कालान्तर में वह एक श्रेष्ठ विद्वान हुआ। नालन्दा विश्वविद्यालय महायान बौद्ध धर्म की शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था। तथापि अन्य अनेक विषयों की शिक्षा भी समुचित रुप से प्रदान की जाती थी। राजा हर्ष के दरबार में महायान शाखा का प्रतिनिधित्व करने संसारमति, प्रज्ञारश्मि, एवं सिंहरश्मि के साथ ह्वेनसांग भी गया था।[61] नालन्दा के भिक्षुओं की श्रेष्ठता का निर्णय उनके गहन और विस्तृत अध्ययन के आधार पर होता था। योग्यता के अनुसार ही उनके अधिकारों का भी निर्णय होता था।[62] ह्वेनसांग के नालन्दा निवास के समय विश्वविद्यालय की ओर से उसकी व्यवस्था थी। एवं उसकी सुविधा के लिये एक 'माणवक' तथा एक 'ब्रह्मचारी' नियुक्त थे।[63] भिक्षुओं को उपाधि भी उनकी योगयता के आधार पर ही दी जाती थी।[64] सर्वश्रेष्ठ उपाधि 'कुलपति' की थी। एवं अन्य उपाधि पंडित की थीं विक्रमशिला में यह उपाधि सभी सफल विद्यार्थियों को दी जाती थी। किन्तु नालन्दा में यह उपाधि विषिष्ट लोगों के लिये सुरक्षित थी।[65] ह्वेनसांग के समय इस विश्वविद्यालय का प्रधान कुलपति शीलभद्र था जो अनेकानेक विषयों में पारंगत था।[66]

नालन्दा विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में ग्रन्थों का विशाल संग्रह तथा प्राचीन पाण्डुलिपियाँ सुरक्षित थी। चीनी यात्रियों के इसके प्रति आकर्षण का एक कारण यह था कि उन्हें यहॉ बौद्ध ग्रन्थों की पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हा जाती थी।[67] इत्सिंग ने यहां रहकर 400 संस्कृत ग्रन्थों की पाण्डुलितियाँ तैयार की थी। विश्वविद्यालय के प्रशासन दो परिषद चलाती थीं जो बौद्धिक एवं प्रशासनिक थी।[68] इसमें पहली समिति सम्बन्धों कार्यों जैसे–विषय पाठ्य शिक्षकों के कार्यक्रम, पुस्तकालय संचालन आदि म परामर्श देती थी। दूसरी समिति आर्थिक प्रशासन विषयक कार्यों में सहायता देती थी। विद्यार्थियों के निवास, भोजन वस्त्र, और चिकित्सा आदि सभी की व्यवस्था निःशुल्क ही थी।[69]

नालन्दा विश्वविद्यालय का पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियाँ :

नालन्दा विश्वविद्यालय का पाठ्यक्रम विस्तृत था। मुख्या रुप से यहाँ महायान शाखा का अध्ययन केन्द्र था। किन्तु हीनयान शाखा के ग्रन्थों तथा अन्य विषयों का भी अध्यापन होता था।[70] पाठ्यक्रम में महायान तथा बौद्ध धर्म के 18 सम्प्रदायों के गन्थों के अतिरिक्त वेद, हेतु विद्या, शब्द विद्या, योगशास्त्र, चिकित्सा, तन्त्रविद्या सांख्य दर्शन के ग्रन्थों की शिक्षा व्याख्यानों के माध्यम से दी जाती थी।[71] ह्वेनसांग ने योगशास्त्र का अध्ययन करने के लिये नालन्दा में प्रवेश किया था। विभिन्न विषयों के प्रकाण्ड विद्वान प्रतिदिन सैकड़ों व्याख्यान देते थें जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी को उपस्थित होना आवश्यक था। नालन्दा में वाद–विवाद ज्ञानार्जन का प्रमुख साधन था।[72] प्रारम्भ में विद्यार्थियों को व्याकरण के नियमों को कंठस्थ कराया जाता था। फिर भाषा का पर्ण ज्ञान प्राप्त कराने के बाद तर्कशास्त्र, दर्शनशास्त्र, आदि के अध्ययन के बाद विद्यार्थियों को वाद–विवाद में अग्रसर होने का अवसर दिया जाता था।[73]नालन्दा में तीनो वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद) वेदान्त तथा सांख्य दर्शन का भी अध्यापन होता था।[74] चिकित्सा शास्त्र भी अध्ययन का एक विषय था। शीलभद्र की अध्यक्षता में ह्वेनसांग ने जिन विषयों का अध्ययन किया था उनमे से प्रमुख विषय–योगशास्त्र, हेतु– विद्या, शक्रविद्या, व्याकरण थे।[75] अतः हम देखते हैं कि नालन्दा में सभी विषयों की उच्च शिक्षा दी जाती थी। एवं विद्यार्थी समान रुप से यहाँ अपना ज्ञानवर्धन करते थे। नालन्दा में वस्तुकला, आयुर्वेद की शिक्षा दी जाती थी। तथा आजकल के समान ही यह विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र था।[76] नालन्दा विश्वविद्यालय मौखिक, पुस्तक व्याख्याविधि, व्याख्यानविधि, शास्त्रार्थविधि से षिक्षण कार्य किया जाता था विश्वविद्यालय में प्रतिदिन 100 भाषण होते थे जिसे विद्यार्थियों को सुनना अनिवार्य था।[77]

नालन्दा विश्वविद्यालय के विद्वान और आचार्य :

नालन्दा विश्वविद्यालय के अध्यापक अपनी विद्धता, योग्यता एवं चारित्रिक दृष्ढ़ता के लिये दूर–दूर तक विख्यात थे।[78] माध्यमिक दर्शन के प्रणेता नागार्जून ने इस विहार के निर्माण में बहुत योगदान दिया। नागार्जुन जैसे प्राध्यापक से ही विश्वविद्यालय की कीर्ति फैली।[79] नागार्जुन के अतिरिक्त कमलशील, चन्दपाल, धर्मपाल, ज्ञानमनि, श्रीमति, प्रभामित, स्थिरमणि, शीलभद्र नालन्दा विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध विद्वान और आचार्य थे। कमलशील (728–776 ई0) तक नालन्दा का प्रधान था।[80]

आर्यदेव नागार्जुन का षिष्य था जिसने नालन्दा में तीन संस्कृत पुस्तकों की रचना की थी।[81] धर्मपाल एक अन्य स्नातक काँचीपुर से नालन्दा में अध्ययन करने आया था, और बाद में वह वहां का प्रधान नियक्त हुआ था। वह पसिद्ध व्याकरण का आचार्य ओर तर्कशास्त्री था।[82] शीलभद्र ने धर्मपाल का शिष्यत्व ग्रहण किया था। बुद्धकीर्ति ने तन्त्र पर एक संस्कृत ग्रन्थ का तिब्बती भाषा में अनुवाद किया। विक्रमशिला के अन्यकर गुप्ता ने इस अनुवाद में सहायता दी थी। [83] ह्वेनसांग के समय शीलभद्र ही विश्वविद्यालय के कुलपति थे। चीनी यात्री उनके चरित्र तथा विद्वता की काफी प्रशंसा करता है वे सभी विषयों के प्रकाण्ड पण्डित थे। उसने स्वयं शीलभद्र के चरणों में बैठकर अध्ययन किया था।[84] वह उन्हें सत्य और धर्म का भण्डार कहा करता था। यहाँ के विद्वानों की प्रसिद्धि दूर–दूर तक फैली हुई थी। इस प्रकार ह्वेनसांग ने नालन्दा के अनेक आचार्यों का उल्लेख किया है।[85] चन्द्रगोमिन को नालन्दा का सर्वश्रेष्ठ स्नातक माना जाता था। उसने लगभग 60 संस्कृत पुस्तकें बौद्ध धर्म पर लिखी। इसी समय एक अन्य प्रसिद्ध स्नातक शान्तरक्षित था।[86] पद्मसम्भव (747 ई0) नालन्दा का ख्यातिप्राप्त आचार्य था, बौद्ध धर्म की शिक्षा देने के लिये वह तिब्बत भी गया था। वहाँ उसने तन्त्र का प्रचार किया।[87] नालन्दा विश्वविद्यालय के विद्वानों की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उन्होंने तिब्बत में बौद्ध धर्म एवं भारतीय संस्कृति का प्रचार किया। तिब्बती भाषा में अनुवाद करने का श्रेय चन्द्रगोमिन को जाता है।[88] तथा नालन्दा के दूसरे विद्वानों में शान्तरक्षित 8वीं शताब्दी के मध्य तिब्बत नरेष के निमन्त्रण पर वहाँ गये, तथा बौद्ध धर्म का उपदेष दिया।[89]

नालन्दा विश्वविद्यालय का पतन :

विद्या का यह महान केन्द्र नालन्दा विश्वविद्यालय लगभग 800 वर्षों तक अपने ज्ञान के प्रकाश से विश्व को आलोकित करता रहा। देश–विदेश से आये न जाने कितने छात्र इसके चरणों मे निवास करके पद–धूलि प्राप्त करके ज्ञानी बने और इसके गौरव की रक्षा करते रहे।[90]

विद्वानों ने नालन्दा विश्वविद्यालय की तुलना आक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज, पेरिस, हावर्ड तथा प्रयाग विश्वविद्यालय से की है। इस तरह से यह कहा जा सकता है कि नालन्दा अपने तरह का अद्भूत एवं निराला विश्वविद्यालय था। हर्ष के बाद लगभग 12वीं शती तक इसकी ख्याति बनी रही।[91] मन्दसोर प्रस्तरलेख (8वीं शताब्दी) से पता चलता है कि सभी नगरों में नालन्दा अपने विद्वानों के कारण जो विभिन्न धर्मग्रन्थों तथा दर्शन के क्षेत्र में निष्णात थे सबसे अधिक ख्याति प्राप्त किये हुये थे।[92] 9वीं शताब्दी में भी यह अन्तर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि प्राप्त किये हुये था। इसकी ख्याति से आकर्षित होकर जावा, सुमात्रा, के शासक बालपुत्रदेव ने नालन्दा में एक मठ बनवाया तथा उसके निर्वाह के लिये अपने मित्र बंगाल के पाल नरेश देवपाल से पॉच गॉव दान में दिलवाया।[93] 11वीं शताब्दी से पाल शासकों ने नालन्दा के स्थान पर विक्रमषिला को राजकीय संरक्षण देना प्रारम्भ कर दिया। जिससे नालन्दा का महत्व घटने लगा।[94] तिब्बती स्रोतों से पता चलता है कि इस समय से नालन्दा पर तन्त्रयान का प्रभाव बढ़ने लगा।[95] इस कारण भी नालन्दा की प्रतिष्ठा को ठेस पहुंची। धीरे–धीरे नालन्दा विश्वविद्यालय की यश कीर्ति धूमिल पड़ने लगी। ऐसा अनुमान किया जाता है कि मठ का पुनः निर्माण न हो सकने के कारण धीरे–धीरे मठ भष्म हो गये।[96] कुछ लोग विक्रमशिला विश्वविद्यालय के प्रभुत्व को भी इसके विनाश का कारण मानते है।[97] मुस्लिम आक्रमण से भी नालन्दा की व्यवस्था को बहुत आघात पहुंचा। 13वीं शताब्दी के अन्त में बख्तियार खिलजी के आक्रमण से नालंदा विश्वविद्यालय के भवन को धराशायी कर दिया भवन तथा विशाल पुस्तकालय को जला दिया गया। और अनेक भिक्षुओं को मौत के घाट उतार दिया गया। [98] अतः उन निर्मम हाथों को क्या कहा जाये जिन्होंने इसके कलेवर में आल लगायी, उस बुद्धि को कितना कोसा जाये जिसने इसके विनाश की राय दी। ऐसे पातकी विनशी को मनुष्य की संज्ञा देना व्यर्थ है। इसके विनाश की एक अन्य कथा भी सामने आती है। व्याख्यान के समय दो गरीब भिक्षुओं पर युवक भिक्षुओं ने गन्दा जल उछाला। जिससे क्रोधित होकर उन भिक्षुओं ने एक वर्ष तक सूर्य की उपासना की एवं एक अग्नि यज्ञ किया। उन्होंने उस यज्ञ की राख नालन्दा पर फेंकी। इस तरह नालन्दा विहार नष्ट हो गया।[99] इस कथा में सत्यता कितनी है। कुछ स्पष्ट नहीं होता है। डॉ0 पी0यल0 रावत का कथन है कि 'यह ज्ञान प्रदीप जो युगो तक प्रकाशित बना रहा और जिसने आध्यात्मिक पवित्र एवं योग्य मानव जीवन को प्रोत्साहन प्रदान किया वह हमेशा के लिये बुझ गया।'[100] वी0यन0 लुनिया के अनुसार– 11वीं सदी में पालवंशी राजाओं द्वारा विक्रमशिला विश्वविद्यालय को प्रोत्साहन देने से और उसके अत्यधिक विकास से तथा बारहवीं सदी में तुर्कों के भयंकर आक्रमणों और अमानुषिक प्रहारों से यह विश्वविद्यालय नष्ट–भ्रष्ट हो गया।[101]

सन्दर्भ

1. मुखर्जी, आर0 के0 – एशियेन्ट इण्डियन एजुकेषन, पृ0–557
2. अल्तेकर, ए0एस0 – एजुकेशन इन एशियेन्ट इण्डिया, पृ0–116
3. वही पृ0–116
4. वही पृ0–117
5. वही पृ0–117
6. वही पृ0–89
7. वाटर्स – ह्वेनसांग, भाग दो, पृ0–164
8. वील – बुद्धिष्ट रेकार्ड्स आफ दि वेस्टर्न वर्ल्ड, भाग एक, पृ0–17
9. वही भाग दो, पृ0–112
10. वही पृ0–20
11. ज0रा0 ए0सी0 – न्यू सिरीज, भाग 13, पृ0–571
12. ह्वी–ली – लाइफ आफ ह्वेनसांग, भाग दो, पृ0–109
13. वाटर्स – ह्वेनसांग, भाग दो, पृ0–164
14. अल्तेकर, ए0एस0 – पूर्वोक्त, पृ0–89
15. वही
16. वाटर्स – ह्वेनसांग,भाग दो, पृ0–154
17. ह्वी–ली – पूर्वोक्त, पृ0–109
18. वाटर्स – पूर्वोक्त, पृ0–164
19. वही पृ0–171
20. वही
21. विद्याभूषण –हिस्ट्री ऑफ दी मेडीवियल स्कूल आफ इण्डियन लाजिक, पृ0–122
22. वही
23. वही
24. वील – लाइफ आफ ह्वेनसांग, पृ0–111
25. वही पृ0–112
26. इत्सिंग – तकाकुसु प्रकाशन, बुद्धिष्ट प्रैक्टिसेस इन इण्डिया, पृ0–154
27. वील – लाइफ आफ ह्वेनसांग, भाग दो, पृ0–112
28. वाटर्स – पूर्वोक्त, पृ0–165
29. विद्याभूषण – पूर्वोक्त, पृ0–516
30. दास, एस0के0 – एजुकेशन सिस्टम आफ दी एशेन्ट हिन्दूज, पृ0–369
31. वही

32. वील – पूर्वोक्त, पृ0–112
33. मुखर्जी, आर0 के0 – एशेन्ट इण्डियन एजुकेशन, पृ0 564
34. वाटर्स – पूर्वोक्त, पृ0–165
35. वही
36. मुखर्जी, आर0 के0 – पूर्वोक्त
37. वही
38. वील – पूर्वोक्त
39. वही
40. इत्सिंग – पूर्वोक्त, पृ0– 106
41. ग्रेब्स, एफ0पी0 – स्टूडेन्ट्स हिस्ट्री आफ एजुकेशन, पृ0–31
42. ज0रा0ए0सो0 – पूर्वोक्त, पृ0 571
43. वील – पूर्वोक्त, पृ0– 113
44. वाटर्स – पूर्वोक्त, पृ0–165
45. वही
46. वाटर्स – पूर्वोक्त, पृ0–177
47. वील – पूर्वोक्त, पृ0–170
48. वही
49. वाटर्स – पूर्वोक्त, पृ0 165
50. वही
51. वील – बुद्धिष्ट रिकार्डस आफ दी वेस्टर्न वर्ल्ड, भाग दो, पृ0–171
52. मुखर्जी, आर0 के0 – पूर्वोक्त, पृ0–564
53. इत्सिंग – पूर्वोक्त, पृ0–175
54. मुखर्जी, आर0 के0 – पूर्वोक्त, पृ0–565
55. वही
56. इत्सिंग – पूर्वोक्त, पृ0– 65
57. वील – पूर्वोक्त, पृ0–106
58. इत्सिंग – पूर्वोक्त, पृ0–84
59. वील – पूर्वोक्त, पृ0–170
60. मुखर्जी, आर0 के0 – एशियेन्ट इण्डियन एजुकेशन, पृ0–566
61. मजूमदार, आर0 सी0 – दि एज आफ इम्पीरियल कन्नौज, पृ0–177
62. वील – पूर्वोक्त, पृ0–160
63. वही
64. वही
65. मजूमदार, आर0सी0 – पूर्वोक्त, पृ0–177
66. विद्याभूषण – पूर्वोक्त, पृ0 –79

67. वही
68. वाटर्स – पूर्वोक्त,
69. इत्सिंग – बुद्धिष्ट प्रैक्टिसेस इन इण्डिया
70. वाटर्स – पूर्वोक्त
71. अल्तेकर, ए0एस0 – एजुकेशन इन एशियन्ट इण्डिया, पृ0– 94
72. वही
73. वील – लाइफ आफ ह्वेनसांग, भाग दो, पृ0–107
74. दास, एस0सी0 – इण्डियन पंडित्स इन दि लैण्ड आफ स्नो, पृ0–108
75. वहीं
76 वील – पूर्वोक्त, पृ0–112
77 वही पृ0–125
78 विद्याभूषण – पूर्वोक्त,
79 वही
80 वहो – बुद्धिस्ट रिकार्डस आफ दि वेस्टर्न वर्ल्ड, भाग दो, पृ0–171
81 दास, एस0सी0 – पूर्वोक्त, पृ0–48
82 बोस, पी0एन0 – इण्डियन टीचर्स आफ बुद्धिस्ट युनिवर्सिटीज, पृ0–131–32
83 वही पृ0–137
84 वही – पूर्वोक्त, पृ0– 171–72
85 वही
86 वही
87 वही
88 वही
89 वही
90 वही
91 वही
92 मिश्र, डी0सी0 – डेवलपमेन्ट आफ एजुकेशन सिस्टम इन इण्डिया, पृ0–26
93 मुखर्जी, आर0के0 – पूर्वोक्त, पृ0–577
94 वही
95 दास, एस0के0 – पूर्वोक्त, पृ0–371
96 वही
97 ल्तेकर, ए0एस0 – एजुकेशन इन एशियेन्ट इण्डिया, पृ0–125
98 वही
99 विद्याभूषण – हिस्ट्री आफ इण्डियन लाजिक, परिशिष्ट 01
100 रावत, पी0एल0 – भारतीय शिक्षा का इतिहास
101 लुनिया, बी0एन0 – भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का विकास, पृ0–470